2. कला एवं साहित्यः प्रवित्ति एवं परंपरा, प्रो0 विश्वनाथ प्रसाद, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, प्रथम संस्करण, 1973
3. हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास (एकादश भाग) सं0, डॉ0 सावित्री सिन्हा, दशरथ ओझा, लक्ष्मी नारायण लाल, नागरी प्रचारिणी सभा, प्रथम संस्करण, 2029वीं
4. आलोचना (विशेषांक) पूर्णाक–39, जुलाई–सितम्बर, 1967
5. हिन्दी अनुशीलन (वृन्दावनलाल वर्मा विशेषांक)

****

आमेर की स्थापत्य कला

अमिता कुमारी*

कच्छवाहों की पुरानी राजधानी आमेर दुर्ग एक पर्वतीय ढ़लान पर जयपुर से 11 किलोमीटर उत्तर में अवस्थित एक पार्वत्य दुर्ग है। कच्छवाहों की राजधानी रहा आमेर दुर्ग चारों ओर से पर्वतमालाओं सें परिवेष्ठित ऐसा दुर्ग है जिसे प्रकृति ने नैर्सगिक सुरक्षा कवच प्रदान किया है। कच्छवाहों से पहले यहां मीणों का शासन था। कच्छवाहा राजकुमार धौलाराय के पुत्र काकिलदेव ने ईस्वीं1036 में अम्बेर को मीणा शासक भुट्ठों से छीना था।[1] काकिलदेव ने आम्बेर के खण्डहरों से भगवान अम्बिकेश्वर की मूर्ति प्राप्त की तथा उसके लिए मंदिर का निर्माण करवाया।[2] कच्छवाहा स्वयं को कौषल नरेश रामचन्द्र जी के द्वितीय पुत्र कुश का वंशज मानते हैं।[3]

ईस्वी 1216 में राजदेव के समय आम् बेर के प्राचीन महलों का निर्माण करवाया गया। कुतंलदेव के समय इसमें कुछ और महलों का निर्माण करवाया गया। पृथ्वीराज के समय बालनबाई की साल में सीतारामजी की पूजा का विशेष प्रबंध किया गया।[4] यह पूजा वर्तमान तक होती आई है। कुंतलदेव की सातवीं पीढ़ी में राजा पृथ्वीराज (ई.1503– 1527) आमेर के राजा हुए। खानवा के युद्ध में पृथ्वीराज, राणा सांगा के सहयोगी थे। उनके बाद राजा भारमल ;ई.1548.74द्ध ,राजा भगवंतदास (ई. 1574–1589), राजा मानसिंह(ई. 1589–1614),राजा भावसिंह(ई. 1614–1621),मिर्जा राजा जयसिंह(ई. 1621–67), सवाई जयसिंह(ई. 1700–27) आदि आमेर के प्रमुख शासक हुए।[5] जिन्होंने आमेर की उन्नति में विशेष योगदान दिया।

वास्तुकला की दृष्टी से आमेर के निकट दो दुर्ग और निर्मित है जयगढ़ और नाहरगढ़। यहां भी एक से बढ़कर एक महलों का निर्माण हुआ। यह विचित्र विरोधाभास है कि जिस युग में सत्ता के लिए भीषण संघर्ष चल रहे थें ,वहीं इस विनाश के तांडव के बीच कही सृजन हो रहा था। तभी मध्य युग में प्रसिद्ध कवि पद्माकर अपनें शब्दों में कुछ इस प्रकार से वर्णन करते है–

जय जय शक्ति विलासमयी
जय जय गढ़ अम्बेर
जय जयपुर सुरपुर सदृश
जो जाहिर चहुंफेर।[6]

*चित्रकला अध्यापिका

जयपुर में आने वाले पर्यटकों के प्रमुख आकर्षणों में से एक है आमेर के महल। पहाड़ों की सघनता, तलहटी की संकीर्णता इसें प्राकृतिक सुरक्षा प्रदान करते है साथ ही इसके उन्नत सुदृढ़ गोलाकार बुर्ज, ऊंची प्राचीर और ऊंचे उन्नत द्वार इसें सहसा ही दुर्ग होने का आभास प्रदान करते है। वास्तु की दृष्टि से सही अर्थों में यह मोर्चाबंदी युक्त महल हैं। निकट स्थित जयगढ़ का भव्य दुर्ग पृष्ठरक्षक के रूप में विद्यमान है। आमेर के महलों में जाने के लिए मावठा नामक विशाल तालाब पार करना पडता है, मावठा तालाब में बारहों महीने पानी भरा रहता हैं। मावठा जलाशय के निकट ऐतिहासिक दिलाराम बाग स्थित हैं। मावठा तालाब और दिलाराम बाग आमेर दुर्ग के नीचे की और स्थित हैं जो उसके सौन्दर्य को द्विगुणित कर रहे हैं। आमेर में यत्र–तत्र मुगल स्थापत्य शैली और हिन्दु स्थापत्य शैली का समन्वय देखने को मिलता हैं।

आमेर के प्रमुख पुरातात्त्विक और ऐतिहासिक स्थलों का परिचय इस प्रकार है –

प्रमुख द्वार, मुख्य महल में 7 भव्य द्वार निर्मित है किले के उपर जाने के लिए प्रथम प्रवेश द्वार जयपोल है। इसमें प्रवेश करते ही विशाल प्रागंण आता है, जलेब चौक। सिंह पोल महल का मुख्य दरवाजा है इस प्रवेश द्वार पर दोहरी सुरक्षा प्रणाली के तहत दो द्वार निर्मित किये गये। जलेब चौक के पूर्व व पश्चिम में दो छोटे मेहराबदार द्वार हैं जो सूरजपोल और चांदपोल कहलाते है। महलों के आंतरिक भाग में जाने के लिए भव्य अलंकृत प्रवेश द्वार निर्मित है जिसें गणेश पोल कहा गया है। गणेश पोल की छतों पर अराइस में बेलबूटे निर्मित हैं। यह द्वार अत्यन्त प्राचीन हैं।इसकों भव्य स्वरूप बाद में प्रदान किया गया। पोल के भीतरी भाग में सोने का काम है। गणेश पोल के मध्य में उपर की ओर भगवान गणेश का चित्र अंकित है। पोल में विशाल पीतल का दरवाजा लगा हुआ है। गणेश पोल का निर्माण सवाई जयसिंह द्वारा करवाया गया।[7] त्रिपोलीया द्वार, वर्तमान में इसी द्वार का उपयोग पर्यटकों की निकासी के लिए किया गया है।

दीवाने–खास, गणेश पोल से होकर दीवाने–खास तक पहुचाँ जा सकता है। दीवाने खास के तीन प्रमुख भाग है पूर्वी भाग शीश महल, मध्य भाग में मुगल शैली पर आधारित बगीचा तथा पश्चिमी भाग में सुख मंदिर। अम्बेर के दीवाने साख का निर्माण मिर्जाराजा जयसिंह ने करवाया।[8] शीश महल दो भागों में बटां है प्रथम मंजिल को जय मंदिर तथा दूसरी मंजिल को जसमंदिर कहते है। शीश महल के दरवाजे मेहराबदार खम्भों से युक्त है। खम्भों पर कुराईदार काम है। बरामदों में बेल बूटों का अंकन है, साथ ही कांच का बहुत सुदंर काम है। महलों में लगे शीशे को बैल्जियम से मगंवाया गया। महल का निर्माण 1623 ई. में खास मेहमानों के

लिए करवाया गया। स्थापत्य कला की दृष्टि से पच्चीकारी कार्य आकर्षण के कारण बहुत चर्चित है। बेहतरीन गुणवत्ता वालें काँच को दीवारों से लेकर छत तक बहुत ही सुदंर ढ़ग से सजाया गया। प्रयोग में लाये गये कांच उत्तल आकर के है, जो रात के समय हल्की सी रोशनी पाकर चमक उठते है। सुख मंदिर दीवाने खास का तीसरा हिस्सा है। इसकी दीवार में एक सुंदर झरना है जो मेहराबयुक्त चौखट सें युक्त है। चौखट में बेलबूटों के अलंकरण से युक्त सैकड़ो छिद्र बने है। सुख मंदिर की किवाड़ो पर हाथीदांत का सुंदर कार्य किया गया है।

शीश महल के आगे मुगल शैली में बने बाग निर्मित हैं। चार बाग के मध्य में कलात्मक हौज है। बाग के चारो ओर संगमरमर के 2–2 फुट के उंचे कलात्मक कटघरे लगे हैं।

सुहाग मंदिर, इसे सौभाग्य मंदिर भी कहते है। यह रानियों के मनोविनोद तथा परिहास का स्थान था। सफेद संगमरमर सें बने इस भवन पर सफेद प्लास्टर से गुलदस्ते बने उत्कीर्ण है। मानसिंह महल का निर्माण (ई.1589 1614) में राजामान सिंह द्वारा करवाया गया। यह महल हिन्दू स्थापत्य का सुंदर उदाहरण है।[9] मानसिंह महल में रानीयों के महल और मानसिंह के महल अलग–अलग बने हैं। नीचे तथा उपर की मंजिल पर 12–12 आवास है। मानसिंह महल के अंदर से ही महल के बाहरी भाग की नीचे की मंजिल पर सेविकाओं के कक्ष बने है जिसे जनाना ड्योढ़ी के नाम से जाना जाता है। वर्तमान में यहाँ आर्ट गैलेरी खुल गई है।

40 खंभों पर सफेद संगमरमर और लाल पत्थर सें युक्त बना है दीवान–ए–आम। इसका निर्माण मिर्जा राजा जयसिंह ने करवाया था जो आमेर के महलों में राजपूत स्थापत्य कला का उत्कृष्ट नमूना है। इनकी शुरूआत ई.1558 में राजा भारमल ने की थी। राजा मान सिंह, जयसिंह और सवाई सिंह नें इसे करीब 100 वर्षो में पूरा करवाया। भवनों के भीतरी भाग में राजपूत स्थापत्य और बाहरी भागों में मुगल शैली का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। महलों के अलावा पहाड़ी की तलहटी में प्राचीन मंदिरों के अवशेष है, जिनमें जगत शिरोमणी मंदिर का अपना अलग आर्कषण है। मंदिर में गरूण की प्रतिमा विराजमान है । यह मंदिर हिन्दू स्थापत्य शैली में निर्मित है। इसके प्रवेश द्वार पर कलात्मक तोरण है। मंदिर में कृष्ण के काले रंग की प्रतिमा स्थापित है। यह मूर्ति चित्तौड़ से लाई गयी थी। मंदिर का निर्माण महाराजा मानसिंह की महारानी कनकावती ने अपने पुत्र जगतसिंह की स्मृति में करवाया था।10

आमेर में शिलादेवी का प्रसिद्ध मंदिर स्थित है। शिला देवी के पार्श्व में भगवान गणेश और मीणा कुल देवी 'हिंगला' की प्रतिमा है। मन्दिर का सम्पूर्ण कार्य

संगमरमर द्वारा कराया गया है। शिलादेवी की प्रतिमा महिषासुर मर्दिनी के रूप में प्रतिष्ठित है। इसकी 8 भुजाएँ है। यह मूर्ति एक पाषाण खण्ड पर उत्कीर्ण है। मन्दिर के जगमोहन में चांदी की घंटी बंधी हुई है। इस मूर्ति को गर्भगृह में प्रतिष्ठित करवाया गया है जो उत्तराभिमुखी है। देवी की मूर्ति महिषासुर मर्दिनी के रूप में स्थापित है। मंदिर का मुख्य द्वार चांदी से निर्मित है। इस पर नवदुर्ग तथा 10 महाविद्याओं कों चित्रित किया गया है। काले रंग के पत्थर से निर्मित प्रतिमा गर्भगृह में उत्त्राभिमुख प्रतिष्ठित है। इस पर नव दुर्गा शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्री, महागौरी एवं सिद्धीदात्री की प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं। दस महाविद्याओं के रूप में काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, त्रिपुर भैरवी, धुमावती, बंगलामुखी, श्रीमातंगी, और कमला देवी को दर्शाया गया। मुख्य द्वार के उपर लाल पत्थर की छोटी सी गणेश जी लाल पत्थर की मूर्ति प्रतिष्ठापित है।मंदिर का मुख्य द्वार चॉदी से निर्मित है। इस रूप में इसकी प्रतिष्ठा सवाई जयसिंह ने कराई थी।[11] अन्य मंदिरों में अम्बिकेश्वर महादेव मंदिर, नृसिंह मंदिर अपने शिल्प और सौन्दर्य के कारण दर्शनीय है। दिलाराम बाग, आमेर के राजप्रासादों के नीचे की ओर स्थित है। इसका निर्माण राजा भारमल ने ईस्वी 1585 में करवाया था। बादशाह अकबर जब आमेर पधारे थे तो उनके विश्राम हेतु विश्रामगृह और इस बाग का निर्माण करवाया गया था।

आमेर के भवनों में आधारभूत भारतीय शैली के तत्व छिपे हुए है। जिनमें चौक, बरामदों के साथ दो कमरों का होना, छोटा द्वार, चित्रित किवांड़, तंग ड्योढ़ीयां, मयूर हाथी की आकृतियाँ आदि प्रमुख है। अम्बेर में महलों, मंदिरों के अलावा बावड़ियॉ और कुण्ड भी है जिसमें पन्नामियाँ का कुण्ड प्रमुख और उल्लेखनीय है। पन्नामियां कुण्ड लगभग 70 फुट गहरा और तीनों ओर से असंख्य सीढ़ीयां बनी हैं जो एक सुन्दर ज्यामितिय आकार बनाती हैं व पश्चिम में दो मंजिला कक्ष बना हैं नीचे की ओर का कक्ष खुला बरामदा हैं, जहां तीन द्वार हैं जो उपर से वृत्ताकार हैं। कुण्ड के चारों और अष्टकोणीय छतरियाँ बनी हुई हैं जिन पर गुम्बद निर्मित हैं। पन्नामियां का कुण्ड सवाई जयसिंह के काल में बना हैं।[12] जो आमेर के प्रतापी नरेशों नें इसके सौन्दर्य और भव्यता को द्विगुणित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। अम्बेर के राजाओं के इस योगदान को कवि भूषण की उक्त पक्ति समर्पित है।13

केत राव मान पावें पातसाहन सों।
पावें पातसाह मान मान के घराने सो!

संदर्भ ग्रंथः

1. डॉ मोहनलाल गुप्ता, रा. के ऐ. दुर्ग. पृ.स. 254
2. वही. पृ. स. 254
3. डॉ रेणु मीणा, आम्बेर के प्रमुख देवालय, पृष्ठ संख्या–5
4. डॉ मोहनलाल गुप्ता, रा. के ऐ. दुर्ग. पृ.स. 254
5. दीनानाथ दूबे, भारत के दुर्ग, पृ.स. 86
6. दीनानाथ दूबे, भारत के दुर्ग, पृ.स. 87
7. डॉ राघवेन्द्र सिंह मनोहर, राजस्थान के प्राचीन नगर और कस्बे, पृ. स. 3
8. डॉ मोहनलाल गुप्ता, राजस्थान के ऐतिहासिक दुर्ग, पृ. स. 259
9. वही. पृ. स. 260
10. डॉ पुष्पदेव सिंह, जयपुर का इतिहास एवं पुरातत्व, पृ. स.126
11. वही. पृ. स. 128
12. डां गीता शर्मा, आमेर के स्थापत्य एंव चित्रकला पृ. स. 40
13. डॉ पुष्पदेव सिंह, जयपुर का इतिहास एवं पुरातत्व, पृ. स.126

****